nbt.india
एक: सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

अप्रैल 2014 वर्ष 19, अंक 4

संदर्भ : विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल

विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस

प्रत्येक वर्ष विश्वभर में 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस मनाया जाता है। यूनेस्को द्वारा आयोजित इस दिवस का उद्देश्य पठन एवं प्रकाशन को प्रोत्साहित करना एवं बौद्धिक संपदा को प्रतिलिप्यधिकार (कॉपीराइट) के द्वारा संरक्षण प्रदान करना है। यह दिवस 1995 से मनाया जा रहा है। इस दिवस पूरी दुनिया में पुस्तक से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। यूनेस्को द्वारा 2014 की विश्व पुस्तक राजधानी नाइजीरिया के शहर पोर्ट हार्कोर्ट को चुना गया है।

विश्व की भाषाएँ : विविधता का उत्सव

भारत में करीब 850 जीवित भाषाएँ हैं। पिछले 50 साल में करीब 250 भाषाएँ विलुप्त हो गई हैं।

इसी तरह, विश्व में 6,000 से अधिक भाषाएँ हैं जिनमें से 300 से ज्यादा भाषाओं के पास अपनी लिपि नहीं है। लेकिन यह धारणा गलत है कि जिस भाषा की लिपि नहीं है वह 'बोली' है। यह आश्चर्यजनक लगेगा, किंतु सत्य है कि विश्व की ज्यादातर भाषाओं के पास लिपि नहीं है। मौजूदा समय में दुनिया की सबसे प्रभावशाली भाषा, अँग्रेजी के पास भी अपनी लिपि नहीं है। अँग्रेजी का काम 'रोमन' लिपि से चल रहा है।

भारत की भाषाओं पर फिर लौटकर आएँ तो हम पाते हैं कि

पृ. सं. 2, कॉलम 1 पर जारी...

यदि तुम उड़ नहीं सकते तो दौड़ो,
यदि तुम दौड़ नहीं सकते तो चलो,
यदि तुम चल नहीं सकते तो रेंगो,
लेकिन गतिशील रहो।

संदर्भ : बलिदान दिवस, 4 अप्रैल (1968) **मार्टिन लूथर किंग**

बच्चों को अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा

1 अप्रैल, 2014 को सारे देश में बच्चों को अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा के मौलिक अधिकार बनने के चार साल पूरे हो गए। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 2010 में इस अनूठी पहल की घोषणा की थी। इस साल से देश के उन 90 लाख से अधिक बच्चों को लाभ हो रहा है जो स्कूल नहीं जाते। ड्रॉपआउट बच्चे पुनः स्कूल आने लगे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा था–मैं चाहता हूँ कि हर भारतीय बच्चा शिक्षा की रोशनी से रोशन हो। एक बेहतर भविष्य का सपना देखे और उसे पूरा करने के लिए काम करे।

किताबों से यारी

गुलज़ार

किताबों से कभी गुज़रो तो यूँ किरदार मिलते हैं
गए वक़्त की ड्योढ़ी पर खड़े कुछ यार मिलते हैं।
किताबें झाँकती हैं
बंद अलमारी के शीशों से,
बड़ी हसरत से तकती हैं,
महीनों अब मुलाकातें नहीं होतीं।
जो शामें उनकी सोहबत में
कटा करती थीं
अब अकसर गुज़र जाती हैं
कंप्यूटर के परदे पर।
बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें।
उन्हें अब नींद में चलने की
आदत हो गई है।
बड़ी हसरत से तकती हैं किताबें।

बदल देती है एक किताब
जीवन का हिसाब-किताब
पंख उड़ने को मिल जाते हैं
पढ़ने को जब मिले किताब।

गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

किताबों के बीच ही मेरी जिंदगी शुरू हुई और निश्चित ही इन्हीं के बीच अंत भी होगा। –ज्यां पाल सार्त्र, प्रसिद्ध विचारक

अरुणाचल प्रदेश में जहाँ 90 भाषाएँ बोली जाती हैं वहीं गोवा में सिर्फ तीन भाषाएँ बोली जाती हैं। दिल्ली, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नै जैसे शहरों में 300 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। दादर और नगर हवेली में एक भाषा 'गोरपा' है जिसका अब तक कोई रिकॉर्ड नहीं है।

करीब 400 से अधिक भाषाएँ आदिवासी और घुमंतू व गैर-अधिसूचित जनजातियाँ बोलती हैं।

यदि हिंदी बोलने वालों की तादाद करीब 40 करोड़ है तो सिक्किम में माझी बोलने वालों की तादाद सिर्फ चार है।

यह एक दिलचस्प तथ्य है कि 1961 की जनगणना में भारत में जहाँ 1,652 भाषाओं का जिक्र है, वहीं 1971 में ये घटकर 182 हो गई और 2001 में मात्र 122। दरअसल, जनगणना में भाषा को मानने का आधार अलग होता है इसलिए 1961 में जिन 1,652 भाषाओं का जिक्र है उनमें से अनुमान के आधार पर वास्तविक तौर पर 1,100 को हम भाषा का दर्जा दे सकते हैं।

ये बातें भाषा रिसर्च एंड पब्लिकेशन सेंटर की ओर से गत वर्ष 'भारतीय भाषाओं के लोक सर्वेक्षण' में उभरकर सामने आईं। भाषाविद् गणेश देवी के उक्त संस्थान द्वारा सर्वेक्षित निष्कर्ष को 68 खंडों में करीब 35 हजार पन्नों की रपट के रूप में तैयार किया गया। विदित हो कि ब्रिटिश शासनकाल में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे जॉन अब्राहम ग्रियर्सन के नेतृत्व में 1894-1928 के बीच हुए भाषा सर्वेक्षण के करीब 100 साल बाद इस तरह का कोई सर्वेक्षण हुआ।

किसी भाषा को 'भाषा' का दर्जा किस आधार पर दिया जाता है इसे स्पष्ट करते हुए श्री देवी ने बताया कि इसका एक महत्वपूर्ण आधार उस भाषा का अपना व्याकरण होना है। एक और आधार है कि उसका 70 प्रतिशत विशिष्ट शब्द भंडार होना चाहिए। विदित हो कि श्री देवी को यूनेस्को का प्रतिष्ठित लिंग्वापॉक्स पुरस्कार मिल चुका है।

भाषा सीखना और उसको अच्छी तरह से प्रयोग करना किसी भी व्यक्ति के लिए एक कला है, एक सलाहियत है, एक जरूरत है।... भाषा से दोस्ती बढ़ती है, बातचीत होती है, ज्ञान मिलता है, आय होती है, दुनिया के दरवाजे खुलते हैं, साहित्य से परिचय होता है, जान बचती है, खाना-पीना ऑर्डर कर सकते हैं, खुद में गरिमा और विश्वास होता है। **—ज्योत्स्ना राय**

संदर्भ : बलिदान दिवस, 8 अप्रैल

स्वतंत्रता का प्रथम परवाना : मंगल पांडे

भारत माता की दासता की जंजीरों को काटने वालों में मंगल पांडे का नाम प्रथम पंक्ति के प्रथम व्यक्ति के रूप में स्मरण किया जाता है। मंगल पांडे का जन्म बलिया (उ.प्र.) में हुआ था। किशोरावस्था में ही वे सेना में भर्ती हो गए। सन् 1857 में जब देश को आजाद कराने के लिए विद्रोह करने की पूर्ण तैयारी हो चुकी थी उस समय इस विद्रोह का उद्घाटन मंगल पांडे ने अपनी रायफल से पहली गोली चलाकर एक अँग्रेज अफसर के सीने को चीरकर 29 मार्च को ही कर दिया। जबकि आजादी के दीवानों ने अँग्रेजों के खिलाफ योजनाबद्ध ढंग से बगावत करने के लिए 31 मई का दिन मुकर्रर किया था। पांडे इस समय बैरकपुर (बंगाल) की छावनी में सिपाही थे।

मंगल पांडे देशभक्त तो थे ही, धार्मिक स्वभाव के भी थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि अँग्रेजी शासक भारत के हिंदू व मुस्लिमों को धर्मभ्रष्ट करने के लिए कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगवाते हैं तो अँग्रेजों के विरुद्ध उनके आक्रोश का ठिकाना न रहा। फलतः वे अँग्रेजों को मारने के लिए इतने अधैर्य हो गए कि देश को आजाद कराने की निश्चित तिथि से कुछ दिन पूर्व ही, 29 मार्च, 1857 को प्रातः 10 बजे परेड स्थल पर क्वार्टर गार्ड के समक्ष ही उसने मेजर सारजेंट ह्यूसन को अपनी गोली से सुला दिया। पांडे के साथी सैनिक भी पांडे के सहयोगी बन गए। इसके बाद लेफ्टिनेंट वाघ आया। पांडे ने अपने शौर्य व युद्ध-कौशल से वाघ को भी मौत के घाट उतार दिया। वाघ के बाद आए एक अन्य गोरे अफसर को भी मंगल पांडे ने अपने साथियों की सहायता से मौत के घाट उतार दिया। सूचना पाकर उसी समय जनरल हेरंसे आया और छिपकर पांडे की कनपटी पर पीछे से पिस्तौल तान दी। पांडे ने अपने को उनसे बचाने के लिए अपने सीने पर स्वयं गोली दाग ली, पर वे मर न सके। सैनिक अदालत ने उन पर मुकदमा चलाया और 8 अप्रैल, 1857 को पूर्ण रेजीमेंट के समक्ष फाँसी दे दी। **ओम प्रकाश मंजुल,** पीलीभीत, उ.प्र.

ज. : 9-4-1893
नि. : 14-4-1963

राहुल सांकृत्यायन एक साथ बहुत कुछ थे—वे यायावर, साहित्यकार, अध्येता थे; पुरातत्ववेत्ता, भाषाविद्, किसान नेता थे। उन्होंने 50 से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनमें उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी, यात्रा वृत्तांत, निबंध, इतिहास, धर्म, दर्शन आदि अनेक विधाएँ शामिल थीं। राहुल सांकृत्यायन को देसी-विदेशी 36 भाषाओं का ज्ञान था। विभिन्न भाषाओं को सीखने के लिए उन्होंने रात-दिन परिश्रम किया और अनेक कष्ट झेले। उन्हे बंजारों की भाषा सीखने के लिए उनकी भैंस और मुर्गियाँ चरानी पड़ी और मार भी सहनी पड़ी। **राहुल ने कहा था : भागो नहीं, दुनिया को बदलो!**

बैसाखी की शुभकामनाएँ!

बिहू की शुभकामनाएँ!

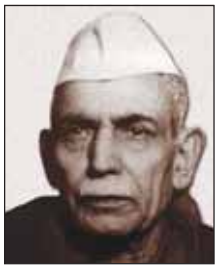

माखनलाल चतुर्वेदी, जन्मदिन, 4 अप्रैल (1889)
कवि व स्वतंत्रता सेनानी। होशंगाबाद जनपद में जन्म। 'कर्मवीर' व 'प्रताप' (साप्ताहिक) का संपादन। 1968 में निधन। एक क्रांतिकारी कवि। 'पुष्प की अभिलाषा' उनकी मशहूर कविता है।

वीर कुँवर सिंह, पुण्यतिथि, 23 अप्रैल (1858)
अपनी सेना के साथ जब कुँवर सिंह गंगा नदी पार कर रहे थे किसी ब्रिटिश जवान की गोलियों ने उनके एक हाथ को छलनी कर दिया। उन्होंने तलवार से अपना वह हाथ काटकर गंगा माँ को भेंट चढ़ा दी। गंभीर रूप से घायल होने की वजह से मौत।

डॉ. भीमराव आंबेडकर, जन्मदिन, 14 अप्रैल (1891)

डॉ. भीमराव कॉलेज स्तर तक की शिक्षा पाने वाले पहले विजातीय भारतीय थे। हिंदू धर्म में व्याप्त वर्ण व्यवस्था की बुराइयों के दृष्टिगत उन्होंने हिंदू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म अपनाया। 'मूकनायक' नामक पत्रिका के माध्यम से छुआछूत आदि जैसी सामाजिक बुराइयों से लड़े। उन्होंने समता सैनिक दल बनाया था और भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की थी। संविधान निर्माता।

श्रीनिवास रामानुजन : पुण्यतिथि, 26 अप्रैल (1920)

वर्ष 2012 भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की 125वीं जयंती वर्ष थी। उनके जन्मदिन, 22 दिसंबर को, भारत सरकार ने, सन् 2011 में, प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय गणित दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। वर्ष 2012 को 'राष्ट्रीय गणित वर्ष' घोषित किया गया था। गणित के दिग्गज जी.एच. हार्डी ने उन्हें समकालीन महान गणितज्ञों की श्रेणी में रखा था।

संदर्भ : पंचायती राज दिवस, 24 अप्रैल

पंचायती राज दिवस सर्वप्रथम 2011 में मनाया गया। संविधान के 73वें संशोधन एक्ट, 1992 के द्वारा पंचायती राज में बड़े परिवर्तन हुए। इससे राजनीतिक शक्ति ग्राम पंचायतों में आ गई। इसी के दृष्टिगत यह दिवस मनाया जाता है।

संदर्भ : पृथ्वी दिवस, 22 अप्रैल

पर्यावरण जागरूकता के लिए हर वर्ष 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। इस दिवस की शुरुआत 1970 से हुई। इस दिवस को जल, जमीन और हवा के सुरक्षा-संरक्षा की शपथ ली जाती है।

संदर्भ : जल संसाधन दिवस, 7 अप्रैल

जल जीवन का परम सत्य है
सोच-समझकर खर्चो पानी।
रूपनारायण कावरा, जयपुर, राजस्थान

संदर्भ : विश्व स्वास्थ्य दिवस, 7 अप्रैल

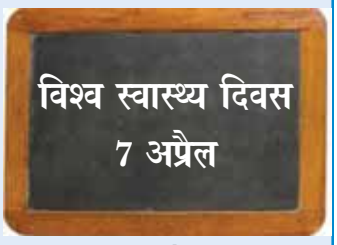

प्रत्येक वर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। यह दिवस 1950 से मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य आम लोगों के स्वास्थ्य के प्रति एक वैश्विक चिंतन एवं जागरूकता का विकास करना है।

जिस शिक्षा का असर हमारे चरित्र पर नहीं होता है वह किसी काम का नहीं। –महात्मा गाँधी

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

जहाँ किताब न हो

राजेंद्र उपाध्याय, पंडारा रोड, नई दिल्ली

जैसे किसी पौधे के साथ
मिट्टी ले जाना जरूरी होता है
जैसे किसी मछली के साथ
पानी ले जाना जरूरी होता है
वैसे ही मेरे साथ जरूरी है
किताब
नहीं तो मैं सूखने लगता हूँ
नहीं तो मैं मुरझाने लगता हूँ।
उस घर में नहीं रह सकता मैं
जहाँ किताब न हो
कुछ-न-कुछ कमी रह जाती है वहाँ
सब कुछ होते हुए भी।

सबकी प्यारी पुस्तक

पुष्कर द्विवेदी, इटावा, उ.प्र.

जो है देती ज्ञान की दस्तक
वो है मेरी प्यारी पुस्तक
दूर अकेलापन यह करती
स्वस्थ मनोरंजन भी करती
हाथों में रहती यह जब तक
ऐसी मेरी प्यारी पुस्तक।
छोटे-बड़ों सभी को भाती
भेदभाव व इसको आती
साथ यह देती मरते दम तक
जीवन-साथी सच्ची पुस्तक।
जानकारियों का है खजाना
इसने, उसने, सबने माना
करे समाज में ऊँचा मस्तक
वो है सबकी प्यारी पुस्तक।

पुस्तक पकड़ो हाथ

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद', काँगड़ा, हि.प्र.

एक बड़ी अलमारी में
पुस्तक करे विलाप
बरसों-बरस झूरती
करती रहती जाप।
करती रहती जाप
मन में धारे मौन
निशिदिन चिंतन करे
उद्धार करे कौन?
'प्रसाद' अलमारी खोल
पुस्तक पकड़ो हाथ
पढ़ो-पढ़ाओ इसे
रखना अपने साथ।

रा.पु. न्यास से प्रकाशित नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत पुस्तक विषयक कुछ पुस्तकें

पुस्तक मेरा मित्र
कामना झा; पृ. 34 ₹ 15
चित्र : सुभाष रॉय
पुस्तक पढ़ने के महत्व को उजागर करती पुस्तक। इसमें कुछ स्कूलवय लड़कों में आपसी वार्तालाप के माध्यम से, एकांकी रूप में, पुस्तक के प्रति आदर रखने एवं पुस्तकों को मित्र मानने का एक संदेश है। अंततः सभी बच्चे पुस्तकों के अच्छे मित्र बन जाते हैं।

पढ़ना है पृ. 20 ₹ 16
अशोक 'अंजुम'
चित्र : दीपक दास
इस पुस्तक में एकांकी रूप में कुछ कलाकार एकांकी का विषय खोजते-खोजते अंततः जीवन में पढ़ाई-लिखाई के महत्व पर नाटक खेलते हैं। अनपढ़ होने के दंश को नाटक रूप में बड़े ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अंत में सब गाते हैं पढ़ना है, भई पढ़ना है!

पुस्तक की दुकान
पुष्पा सिंह 'विसेन'
चित्र : दीपक दास
पृ. 16 ₹ 11
एक छोटे-से कसबे का एक किशोरवय बालक शहर आता है और एक पुस्तक की दुकान में नौकरी कर लेता है। पुस्तक बेचने के साथ-साथ वह पढ़ाई भी करता जाता है और उसकी किस्मत खुल जाती है। पढ़ाई का महत्व बताती है पुस्तक।

किताबें जीती-जागती सभ्यताएँ हैं। इन्हें पढ़ें, गुनें और अपनाएँ!

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

पुस्तक की दस्तक

कमलाप्रसाद चौरसिया, भोपाल, म.प्र.

पुस्तक
देती है दस्तक
अनपढ़ के द्वार पर
अज्ञान के किवाड़ पर
खोलो
अंदर चढ़ी कुंडी
दरवाजों की पीठ पर चढ़ा बैठा
हटाओ सदा के लिए
कि खुल जाएँ खुद-ब-खुद
पल्ले
जब भी आए हवा का झोंका
शीतल-मंद ज्ञान समीर का
लिपि के रथ पर चढ़
अक्षरों के आसन गढ़
खुले रखो द्वार
खुले न रख सको तो
निर्बाध छोड़ दो
मन की हटक
उम्र की झटक
फटक दो, फटक
नहीं चाहिए फाटक अक्षर को
कहती है पुस्तक, देती हुई दस्तक।

पुस्तकें भी हमें पढ़ती हैं

प्रो. महेश दुबे, नवी मुंबई, महाराष्ट्र

केवल पुस्तकें नहीं हैं ये
ये हैं
यश के शिलालेख पर अंकित
हमारी कीर्ति-पताकाएँ।
तुमने इन्हें देखा, छुआ
अनुभव किया,
तभी इन पृष्ठों ने
कुछ तुमसे कहा होगा।
जीवन ऐसी ही ध्वनियों को
पकड़ने का
मौन प्रयास है।
आओ! पुस्तकों की दुनिया
तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।
धीरे से दस्तक दो
सकुचाओ मत
न कोई बहाना ढूँढ़ो
बस, जुड़ो इनसे।
और, जितना तुम इन्हें पढ़ सको, पढ़ो।
वैसे, सच तो यह है कि
पुस्तकें भी हमें पढ़ती हैं।
तुम्हें ये पढ़ सकें, ऐसे
अवसर इन्हें दो।

पुस्तकें पुकारती हैं मुझे

सत्यनारायण भटनागर, रतलाम, म.प्र.

पुस्तक पड़ी हुई है
बिस्तर पर / सिरहाने
टेबल पर रखी हुई है
अलमारी में सजी हुई है।

बिस्तर वाली पुस्तक
जगाती है मुझे नींद से
नए स्वप्न बुनने के लिए
जो साकार हो धरा पर
बनाए नए उद्यान
खिलाए पुष्प
फैलाए सुगंध!

टेबल पर रखी पुस्तक
कहती है—कर्म करो
उठो, आगे बढ़ो
कुछ काम करो
कुछ काम करो!

अलमारी की पुस्तकें
देती हैं आवाज
पुकारती हैं मुझे
झाँको मुझमें
देखो मुझको
भरा पड़ा है संसार!

दुनिया को बदलने का जादू है किताब। चलो, किताब पढ़ें!

किताबें, सरस्वती का रूप
किताबें, पूस की धूप
कोहरे में भी गुनगुनी लगे
किताबें, माँ का स्वरूप।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

सबकी सुधि लेती है किताब
अपना सब कुछ देती है किताब
जो पढ़ ले इसे ध्यान से
उसे महान बना देती किताब।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर, उ.प्र.

ज्ञानात्मक दर्पण है पुस्तक
सृजनात्मक अर्पण है पुस्तक
संवेदित मन के भावों का
शब्दात्मक तर्पण है पुस्तक।

दयाकृष्ण विजयवर्गीय, कोटा, राजस्थान

जैसे वर्षा की बूँदें
धरती को हरा-भरा कर देती हैं
वैसे ही पुस्तकें जीवन को
ज्ञान-भरा कर देती हैं।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

पुस्तक हमारी जान है
पुस्तक हमारी शान है
पुस्तक है हाथ में
भारत की पहचान है।

कांति एस अय्यर, सूरत, गुजरात

पुस्तक सच्ची सहेली है
इसका साथ न छोड़ेंगे
जीवन जीना यह सिखाती
इससे मुख न मोड़ेंगे।

राधेलाल 'नवचक्र', भागलपुर, बिहार

पुस्तकें मित्र के समान होती हैं। ये कम ही हों, लेकिन ठोक-बजाकर चुनी हुई हों। –सैमुएल जॉनसन

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ साक्षरता संवाद : मार्च अंक : नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला पर समाचार बहुत ही सुखद और जानकारीपूर्ण लगा। साथ में कविताएँ मीठी और प्यारी लगीं। साक्षरता संवाद हमारे लिए ज्ञान रूपी मंदिर बन गया है जहाँ पर सब कुछ पढ़ने को मिल जाता है। इस छोटी-सी पत्रिका में सब कुछ समाहित है। इसे हर पाठक बेसब्री से पढ़ने का हर महीने इंतजार करता है।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान', गोलाबाजार, गोरखपुर, उ.प्र.

☐ फरवरी अंक : पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न आलेख जानकारी बढ़ाने वाले थे। मातृभाषा पर विभिन्न विद्वानों के विचार ज्ञानवर्धक रहे। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की प्रकाशित पुस्तकें पाठकों को जानकारी देने वाली होती हैं। गोपीनाथ कालभोर की 'साक्षरता की महिमा न्यारी' तथा डॉ. वासुदेवन शेष की 'शिक्षा अज्ञान दूर करे' कविताएँ काबिलेतारीफ लगीं।

प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

☐ यह अंक भी पूर्ववर्ती अंकों की भाँति विविधतापूर्ण है, साथ ही गहनता-गंभीरतापूर्ण भी। साक्षरता संवाद की सबसे बड़ी दो विशेषताओं–साक्षरता के लिए सोद्देश्यपूर्ण सामग्री और सामयिकता को संजोए सामग्री की प्रस्तुति–का बारंबार उल्लेख करना अब पिष्टपोषण-सा लगता है। अन्य सामग्रियों के अलावा आचार्य रामलोचन शरण के जन्मदिन पर उनके जीवन एवं कर्म पर प्रस्तुत आलेख अंक की अपूर्व उपलब्धि रही। आपने आचार्यप्रवर शरण जी पर समयोचित सामग्री देकर स्तुत्य कार्य किया है। 'हमारी भाषा हमारा प्रतिबिंब' आलेख भी पठनीय लगा।

ओम प्रकाश मंजुल, पूरनपुर, पीलीभीत, उ.प्र.

☐ साक्षरता को लेकर किए जा रहे आपके कार्य महत्वपूर्ण और अनुकरणीय हैं। जनवरी व फरवरी अंक मिले। अनासक्त कर्मयोगी आचार्य रामलोचन शरण को याद करना अच्छा लगा। महापुरुषों को उनकी जन्म या पुण्य तिथियों पर स्मरण करना, उनके रचनात्मक अवदानों को यादगार पंक्तियों के साथ उद्धृत करना काफी पसंद आया। नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित कविताएँ पठनीय एवं अनुकरणीय होती हैं।

अनिरुद्ध प्रसाद विमल, संपा.-'समय', बाँका, बिहार

☐ जनवरी : इस अंक में विश्व पुस्तक मेला, महापुरुषों की जन्म व पुण्य तिथियों के साथ-साथ उनके विचार जानने का अवसर मिला। नवसाक्षरों के लिए हिंदी वर्णमाला सीखने की कविता बच्चों के लिए भी उपयोगी है। साक्षरता संवाद राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार व नवसाक्षरों को हिंदी भाषा सीखने के लिए भी महत्वपूर्ण पत्रिका है। पत्रिका लघु होते हुए भी 'गागर में सागर' की उक्ति को चरितार्थ करती है। लुई ब्रेल पर प्रकाशित आलेख बेहद ज्ञानवर्धक लगा। पत्रिका का प्रत्येक अंक सराहनीय व संग्रहणीय है। कलेवर में पत्रिका भले ही छोटी हो, पर पाठकों का इस पर बहुत ही भरोसा है।

निरक्षरों को बनाता है यह साक्षर
अनपढ़ भी करने लगे अब हस्ताक्षर
इसका कितना करें गुणगान
साक्षरता संवाद है सचमुच वरदान!

विजय सिंह बलवान, बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ साक्षरता संवाद का हर अंक विशेष होता है। शिक्षा-साक्षरता के प्रचार-प्रसार के महत्वपूर्ण कार्य के लिए साधुवाद। साक्षरता संवाद से मुझे बहुत ऊर्जा मिलती है। यह ऊर्जा हमेशा मिलती रहे इसी कामना के साथ...

मीरा सिंह 'मीरा', डुमराँव, बक्सर, बिहार

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया न्यास की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

अनपढ़ हमें अब रहना नहीं

भोमाराम बैरवा, बसवा, दौसा, राजस्थान

अनपढ़ हमें अब रहना नहीं
दर-दर ठोकर खाना नहीं।
अब हमें निरक्षर रहना नहीं
अभिशाप भरी जिंदगी जीना नहीं।
ज्ञान का भंडार कम करना नहीं
अज्ञानता को गले लगाना नहीं।
प्रौढ़ शिक्षा का अलख जगाना है
साक्षरता का बीड़ा उठाना है।
पढ़-लिखकर हम होंगे कामयाब
हमें अपनी सोच बदलनी है।
अज्ञानता से कोसों दूर रहना है
मानव-मानव को साक्षर करना है।
हमें शिक्षा से दूर रहना नहीं
अनपढ़ हमें अब रहना नहीं।

अकेलेपन की मित्र किताब
सबसे अच्छी मित्र किताब।

जगदीश गुप्त, कटनी, म.प्र.

अशिक्षा मिटाएँ

विनोद चंद्र पांडेय 'विनोद', लखनऊ, उ.प्र.

अशिक्षा मिटाएँ, अशिक्षा मिटाएँ।
सभी देश में पढ़े हों, लिखे हों
सभी ज्ञान-विज्ञान में भी कढ़े हों
न कोई निरक्षर रहे अब कहीं पर
अविद्या भगाएँ, अविद्या भगाएँ।

सभी साक्षर हों रखें जानकारी
उन्हें ज्ञात हो काम की बात सारी
न अज्ञानता रोक दे पथ प्रगति का
सुशिक्षित, प्रशिक्षित सभी को बनाएँ
अशिक्षा मिटाएँ, अशिक्षा मिटाएँ।

न अनपढ़ कभी प्राप्त करता सफलता
रहे जिंदगी में सदा हाथ मलता
न साधन उसे जीविका का सुलभ हो
रहे झेलता वह सभी आपदाएँ
अशिक्षा मिटाएँ, अशिक्षा मिटाएँ।

सुखी है वही जो न छोड़े पढ़ाई
सुखी है वही जो समझ ले लिखाई
जगत में उसी का सफल जन्म-जीवन
चरण लक्ष्य से हम न पीछे हटाएँ
अशिक्षा मिटाएँ, अशिक्षा मिटाएँ।

अक्षरदीप जलाओ जी
अंधियारा भगाओ जी
दुख के दिन बीत गए
खुशियाँ मनाओ जी।

मीरा सिंह 'मीरा', बक्सर, बिहार

साक्षरता से सींचेंगे ज्ञान की क्यारी / बदल जाएगी फिर दिनचर्या हमारी! –स्वदेश मंडावरी, फरीदाबाद, हरियाणा

पढ़ो, बढ़ो

डॉ. बी.एल. कपूर, मंडी, हि.प्र.

आज से साठ वर्ष पूर्व मेरी एक प्यारी-प्यारी बालकों की पत्रिका प्रयाग से निकलती थी। उसको 'शिशु' नाम दिया गया था। वार्षिक चंदा मात्र दो रुपये था। उसे सत्यवान शर्मा नामक व्यक्ति का संपादकत्व प्राप्त था। पत्रिका पुस्तकाकार में और मासिक थी और हमेशा उसमें रंग-बिरंगे चित्रों के साथ छापा जाता था। पत्रिका के आरंभ में भारत माता का चित्र रहता था, जो हाथ में तिरंगा ध्वज धारण करती दिखाई जाती थी। उसके नीचे चार पंक्तियों में एक दोहा छपता था, जिसके बोल थे :

पढ़ो, बढ़ो भारत संतान,
हृदय धरो माता का ध्यान।
तुम ही पर आशा है सारी,
मुख निरखे भारत महतारी।

यह संदेश आज भी प्रासंगिक है। जब तक हम पढ़ेंगे नहीं, आगे कैसे बढ़ेंगे? और जब तक हमारे कदम बढ़ते रहेंगे देश भी आगे की ओर ही निरंतर गतिशील रहेगा। अतः पढ़ना-लिखना ही प्रगति का मूलमंत्र है।

पढ़कर देखो, पता चलेगा कि एक सुंदर दुनिया और है।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/04/2014

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद पत्रिका के स्वामित्व संबंधी घोषणा

प्रपत्र—IV

(कृपया नियम-8 देखें)

प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	सतीश कुमार
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
संपादक/कार्यकारी संपादक	:	दीपक कुमार गुप्ता
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
समाचार-पत्र पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति और साझीदार अथवा पूरी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयरधारियों के नाम एवं पते	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मैं, सतीश कुमार, एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

दिनांक : 01 अप्रैल, 2014

सतीश कुमार
(प्रकाशक का हस्ताक्षर)

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

nbt.india

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक/कार्यकारी संपादक : दीपक कुमार गुप्ता।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070